होली और होलिका-दहन

-ब्र.कु.गंगाधर

भारत में हर आये दिन कोई न कोई त्योहार मनाया ही जाता है, यदि हम इन त्योहारों की गिनती करे तो यहां तीन सौ पैसठ दिनों में शायद तीन सौ छियासठ त्योहार निकलेंगे। तथापि इन त्योहारों में से शिवरात्रि, होली, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, नवरात्रि, दशहरा और दीपावली ही मुख्य त्योहार हैं। इनके अतिरिक्त संगम अथवा कुम्भ का मेला, बसंत का मेला और पुरुषोत्तम मास आदि भी मनाये जाते हैं। आज इन त्योहारों को जिस अर्थ में और जिस रीति से मनाया जाता है, उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये साम्प्रदायिक त्योहार हैं अर्थात् कोई त्योहार शैव लोगों का, कोई वैष्णवों का तो कोई शाक्त सम्प्रदाय वालों का है। ऐसा लगता है कि ये त्योहार भिन्न-भिन्न देवताओं या देवियों अथवा भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक वृत्तांतों की याद में मनाये जाते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि सभी त्योहार शिवरात्रि से निकले हैं और ये सभी किसी न किसी तरह परमात्मा शिव के अवतरण काल अर्थात् संगमयुग (कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संधिकाल) से सम्बन्धित हैं।

होली का त्योहार भारत के मुख्य त्योहारों में से एक है। वास्तव में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है। जिसके रहस्य को समझ लेने पर लोक और परलोक दोनों सिद्ध हो जाते हैं। भारत में जो भी त्योहार मनाये जाते हैं उनमें एक ज्ञान-युक्त क्रम अथवा सिलसिला भी है। उस क्रम में होली से पहले शिवरात्रि का उत्सव आता है। वह उत्सव परमपिता परमात्मा शिव की याद में मनाया जाता है। उनके अवतरण से पूर्व मनुष्यों पर पांच विकारों का रंग चढ़ा होता है और सारे संसार में अज्ञान रात्रि छाई होती है। ऐसे समय पर सत्, चित्, आनंद स्वरूप परमात्मा शिव आकर अपने 'संग का रंग' अर्थात् 'ज्ञान-योग का रंग' मनुष्यात्माओं को देते हैं। उसी वृतांत की याद में आज तक शिवरात्रि के बाद होली का त्योहार मनाया जाता है।

'ज्ञान' को जैसे 'अमृत' कहा गया है, वैसे ही ज्ञान को 'अंजन' भी कहा गया है, काम-क्रोधादि विकार रूपी रोगों को हरने वाली 'परम औषधि' भी और आत्मा को प्रभु की मस्ती में रंगने वाला 'रंग' भी। जैसे संग के प्रभाव को 'संग का रंग' कहा गया है, उसी प्रकार आत्मा पर ज्ञान का जो प्रभाव पड़ता है, उसे मुहावरे में 'ज्ञान का रंग चढ़ना' भी कहा गया है। अत: परमात्मा शिव द्वारा संगम युग में जो ज्ञान मिला, उसी की याद में होली का त्योहार आज स्थूल रंग से मनाया जाता है। क्योंकि आज नर-नारियों के पास ज्ञान-रंग तो है नहीं। परमात्मा शिव तो ज्ञान-रंग द्वारा आत्माओं को रंगते हैं परन्तु आज बाह्यमुखी लोग स्थूल रंग द्वारा दूसरों के कपड़े अथवा चेहरे बिगाड़ देते हैं।

होली के अवसर पर उपलों में धागे डालकर होलिका जलाने की जो प्रथा है, वह भी इसी रहस्य का परिचय देती है कि यह शरीर उपालों की तरह विनाशी है, यह एक दिन जलकर राख हो जाने वाला है परन्तु आत्मा अविनाशी है, उसे अग्नि नहीं जला सकती। होलिका के अवसर पर लोग गेहूं और जौ की बालों को भूनते हैं। जैसे भूना हुआ बीज नये फल की उत्पत्ति नहीं कर सकता वैसे ही ज्ञान-युग अवस्था में किया गया कर्म, विकर्म का रूप नहीं ले सकता अर्थात् वह विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता। अत: होलिका इस बात का भी प्रतीक है कि परमपिता परमात्मा शिव ने कलियुगी सृष्टि के अंत में मनुष्यात्माओं को ज्ञान-योग की अग्नि में कर्म रूपी बीज को भूनने की जो सद्मति दी थी हम उसी का पालन करें और कुछ लकड़ियों और उपलों को जलाने को ही होली न मान लें बल्कि योगाग्नि से अपने पुराने एवं दूषित संस्कारों को दग्ध करें और जो कर्म करें वह ज्ञान-युक्त होकर करें।

भारत में, देशी वर्ष फाल्गुन की पूर्णमासी को समाप्त होता है। इसलिए, फाल्गुन की पूर्णमासी की रात्रि को होलिका जलाया जाता है जिसका अर्थ है कि पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना, अपने दु:खों को भूलना और हंसते-खेलते नये वर्ष का आह्वान करना। भारत के कई राज्यों में 'होलिका दहन' को 'संवत जलाना' भी कहते हैं। पुराने वर्ष के अंत में इस त्योहार का मनाया जाना इस रहस्य का भी परिचय देता है कि यह त्योहार पहले-पहल कल्प अथवा कलियुग के अंत में मनाया गया था जिसके बाद सतयुग के सुख-शांति के दिन शुरू हुए थे। होलिका-दहन का पर्व इस बात की ओर भी संकेत करता है कि जो मनुष्य प्रह्लाद की तरह स्वयं को परमात्मा का पुत्र निश्चय करते हैं, उन्हीं से परमात्मा की प्रीति होती है और जो लोग हिरण्यकश्यप की तरह मिथ्या-ज्ञान के अभिमानी हैं अर्थात् जो लोग स्वयं को भगवान मानते हैं, वे 'असुर' हैं और विनाश को प्राप्त होते हैं। यह जो कहा गया है कि हिरण्यकश्यप ने वरदान प्राप्त किया था कि ''न मैं दिन में मरूं, न रात में, न अंदर मरूं, न बाहर और मैं किसी मनुष्य द्वारा भी न मरूं'' - यह भी संगयुग की याद दिलाता है क्योंकि सतयुग और त्रेतायुग 'ब्रह्मा का दिन' है और द्वापर युग तथा कलियुग 'ब्रह्मा की रात्रि' है और संगमयुग में दिन और रात का संगम है। अत: संगमयुग में, जबकि सतयुग रूपी दिन का अभी उदय नहीं हुआ होता और कलियुग रूपी रात्रि का अंत हो चला होता है, तभी मिथ्या-ज्ञान के अभिमानी, आसुरी स्वभाव वाले लोगों का विनाश होता है।

-शेष भाग 10 पर

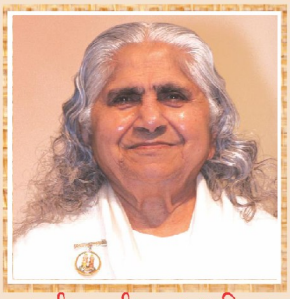

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

परमात्मा के वरदान का लाभ उठाएं

सारे विश्व भर से सब मधुबन में खींचकर आते हैं। मधुबन में स्थिति हर एक ही अच्छी होती है। यहां जो स्थिति बनती है, ऐसी स्थिति सदा रहे। प्रभु की लीला को देख यहां हर एक के दिल में बाबा है, क्यों? क्योंकि और कोई दिल में है ही नहीं। नया साल इशारा दे रहा है, बाबा कहता है अब नहीं तो कब नहीं, मम्मा कहती है जो करना है अब कर लो। ब्रह्मा बाबा के रथ द्वारा शिव बाबा ने क्या-क्या किया, हम बच्चों ने आँखों से देखा है। इन आँखों को देखने की बुद्धि भी बाबा ने दी है। तभी कहा जाता है दिव्य बुद्धि दाता, दिव्य दृष्टि दाता। अभी अपनी दृष्टि को देखो कितनी चेंज हुई है। बुद्धि से दृष्टि चेंज हो गई है। बाबा को देख करके, शिव बाबा को देखना हो तो ब्रह्मा बाबा के मस्तक में देखों। ब्रह्मा बाबा को जानना हो तो बच्चा बनकर देखो। बच्चा हो तो कैसा, बच्चा हूँ, वारिस हूँ। बच्चा वह जिसको वर्से का नशा हो। वर्से में सुख-शांति मिला है, हमारा कितना भाग्य है जो वर्सा लेने के लायक बनाया है। हम भी पुरुषार्थ करके बाप से पूरा वर्सा लेने के लायक बनें। कभी ब्रह्मा बाबा से हद की बातें नहीं सुनी। तो हम भी अपने आपको चेक करें और चेंज करें। बेहद के बाप का बच्चा हूँ, बेहद का वर्सा मिला है। बेहद में रहने से बेहद की बादशाही मिलेगी, ऐसे नहीं मिलेगी। वर्से के अनुभव से, ऐसा लायक बनने से, अपनी जीवन यात्रा सफला करने से, निष्फल एक घड़ी एक मिनट न जावे, एक पैसा न जावे। चारों सबजेक्ट में पास होने के लिए समय, संकल्प, श्वांस, सम्पत्ति सब सफल करना है। फुल पास वही हो सकता है जिसकी कोई भी सबजेक्ट में मार्क्स कम न हो।

नियम और संयम की लिस्ट निकालो। जो बाबा ने बार-बार ध्यान खिंचवाया है 'फरिश्ता भव'। मैंने देखा है, आपको भी अनुभव है, भगवानुवाच - जो भगवान के मुख से महावाक्य निकलते हैं हो जाता है। सारे यज्ञ की हिस्ट्री को देखो। ब्रह्मा बाबा की कितनी महिमा करें। बाबा का हर संकल्प वाणी कर्म से बाबा के चेहरे से चलने से बहुत सीखने को मिला है। इसमें हमको नकल करने का अक्ल चाहिए। बाबा में हमेशा चार रूप दिखाई देते थे - साकार, सम्पूर्ण ब्रह्मा, निराकार और नारायण। बाबा कभी-कभी नारायण की एक्ट करता था, बड़े नशे से चलता था। साकार में बाबा को देखा, कितना सम्पूर्ण, सम्पन्न बनने की लगन रही। मुझे बाबा की सीन सामने आती, बाबा के सामने बैठो तो बहुत अच्छा लगता था। भगवान ने अर्जुन को गीता सुनाई, अभी वही भगवान हमें समाने बैठकर गीता सुना रहा है। संगमयुग की इन घड़ियों में पुरानी बातों को छोड़ो, वह किचड़ा है। कईयों की चलन से पुराना छूटता ही नहीं है। हम इतना फ्री हैं, खुशनसीब हैं। ब्राह्मण कुल के जो नियम हैं ब्राह्मण कुल की संयम पर चलने से फरिश्ता बनना सहज है क्योंकि दूसरे सब बंधन छूट गये। कर्मबंधन तोड़ो, आदतों को छोड़ों, पुरानी बातों को भूलो। कल की बात भी याद न आये। याद हैं तो ईश्वरीय चरित्र याद है। भगवत्, गीता स्मृति में हैं और सब बातें छूट जाती हैं बस यही याद रहता है।

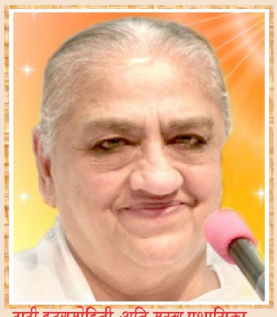

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

समय बहुत मूल्य वान इसे व्यर्थ न गँवाना

ओम् शांति कहने से सारे ज्ञान का सार बुद्धि में इमर्ज हो जाता है। ओम् शांति कहने से कितनी खुशी होती है। बाबा ने हमें कितना सम्मान दिया है, दुनिया में कितना भी बड़ा सम्मान मिले लेकिन फिर भी मनुष्य, मनुष्य को देगा। हमको भिन्न-भिन्न रीति से सम्मान देने वाला कौन? मेरा बाबा। सबके जिगर से निकलता है मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा। बाबा कहा और माया गयी क्योंकि बाबा के आगे माया ठहर नहीं सकती। जैसे लाइट के आगे कोई भी जानवर ठहर नहीं सकता, न ही अटैक कर सकता है। तो बाबा के आगे माया कुछ नहीं कर सकती, दूर भाग जाती है।

आज बाबा ने हमें जो सम्मान दिया है कि बच्चे तुम संतुष्टमणियां हो। जो संतुष्ट होगा वो मणी के मुआफिक चमकेगा जरूर, लाइट माइट रूप होगा क्योंकि लाइट चमकती है। तो बाबा ने कहा मैं हरेक बच्चे को देखता हूँ कि मेरा एक-एक बच्चा संतुष्टमणि है। और जो संतुष्टमणि है वो अपने को भी प्रिय होगा, बाप को भी प्रिय होगा और परिवार को भी प्रिय होगा। कई समझते हैं बाबा मेरे से संतुष्ट हैं ना, तो सब कुछ हो गया या मैं बाबा से संतुष्ट हूँ तो सब कुछ हो गया, लेकिन नहीं। बाबा कहते हैं परिवार भी जरूरी है, क्यों? क्योंकि हम सिर्फ धर्म स्थापन नहीं कर रहे हैं, धर्म के साथ राज्य भी स्थापन कर रहे हैं। तो राज्य में राजा भी चाहिए, प्रजा भी चाहिए। अपने ऊपर ही राज्य करेंगे क्या? इसलिए बाबा कहते हैं कि यह ब्राह्मण परिवार सारे कल्प में बहुत प्यारा है, आप सब भी अपने से पूछो। हम सबको, एक-एक को ढूंढके निकाला किसने? बाबा ने हमें ढूंढ लिया तो अपना भाग्य देखो, हमको किसने ढूंढा? स्वयं भगवान ने। तो एक-एक ब्राह्मण परिवार की आत्मा बहुत-बहुत भाग्यवान है और हमारा परिवार है तो परिवार में प्यार जरूरी है।

सारे कल्प में इतना बड़ा परिवार होता ही नहीं, हो ही नहीं सकता क्योंकि यह तो मुख का परिवार है तो कितना बड़ा परिवार और कितना प्यार परिवार... एक-एक की विशेषता आप देखो। बाबा ने हरेक को कोई न कोई विशेषता दी जरूर है लेकिन उस विशेषता को हम कार्य में लगायें या नहीं लगायें वो हमारे ऊपर निर्भर है। बाबा हमेशा कहते हैं बच्चे बाप समान बनो। तो कई भाई-बहनें कहते हैं शिवबाबा तो निराकार है, हम तो शरीरधारी हैं तो बाबा कहते बच्चे यह ब्रह्मा बाबा तो आपके समान है ना! ब्रह्मा बाबा की तो आयु भी बड़ी थी, सब पास किया, बिजनेस भी किया। तो जब ब्रह्मा बाबा साकार सृष्टि में कर सकता है तो आप क्यों नहीं कर सकते, फॉलो ब्रह्मा बाबा। पहले तो सिर्फ अकेला ब्रह्मा बाबा था, शिव बाबा की सिर्फ प्रवेशता हुई, सारी स्थापना ब्रह्मा बाबा ने की। अपनी कमाई जो बाबा ने की थी उससे यज्ञ शुरु किया। सोचो पैसा कितना जल्दी खत्म होता है। यह तो ख्याल आता कि यह पैसा कितना समय चलेगा? लेकिन ब्रह्मा बाबा की ताकत ऐसी थी बेफिकर बादशाह। हमको भी बाबा कहता है बेफिकर बादशाह बनो। फिकर तब होता है जब कोई गलती होती है। अगर गलती नहीं हो, अपने योग के

शेष भाग 6 पर